डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी.जैन कॉलेज, आरा

Topic - Early Dalit movements in Western India.
पश्चिमी भारत में शुरुआती दलित आंदोलन

Ans. - पश्चिमी भारत (विशेषकर Maharashtra, Gujarat तथा आंशिक रूप से Karnataka) में दलित आंदोलन का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के मध्य से माना जाता है। यह आंदोलन सामाजिक न्याय, शिक्षा, मंदिर-प्रवेश, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष के रूप में विकसित हुआ।

1. सामाजिक सुधार आंदोलनों की पृष्ठभूमि :

---

(1) ज्योतिबा फुले और सत्यशोधक आंदोलन :
पश्चिमी भारत में दलित चेतना का वास्तविक प्रारम्भ Jyotirao Phule से माना जाता है।

प्रमुख तथ्य:
1873 में Satyashodhak Samaj की स्थापना (पुणे)
उद्देश्य: ब्राह्मणवादी वर्चस्व का विरोध, शूद्र-अतिशूद्रों को शिक्षा और समान अधिकार।
फुले ने अपनी पुस्तक Gulamgiri में जाति-व्यवस्था की तीखी आलोचना की।
स्त्री शिक्षा और दलित शिक्षा पर विशेष बल।

महत्व:

पहली बार दलितों को संगठित वैचारिक आधार मिला।
जाति उत्पीड़न को धार्मिक नहीं बल्कि सामाजिक-राजनीतिक समस्या बताया।

(2) सावित्रीबाई फुले का योगदान :

Savitribai Phule ने 1848 में पुणे में बालिकाओं के लिए पहला स्कूल खोला।
उन्होंने दलित एवं स्त्री शिक्षा को सामाजिक क्रांति का माध्यम बनाया।

2. कोल्हापुर आंदोलन और शाहू महाराज :

---

(1) शाहू महाराज की नीतियाँ :
Shahu Maharaj (कोल्हापुर) ने 1902 में पिछड़ी जातियों के लिए 50% आरक्षण लागू किया — यह भारत का पहला आरक्षण प्रयास था।

प्रमुख कदम:
दलितों के लिए छात्रावास,
मंदिर प्रवेश का समर्थन,
गैर-ब्राह्मण आंदोलन को संरक्षण।

महत्व:
सामाजिक न्याय को प्रशासनिक नीति का हिस्सा बनाया।
गैर-ब्राह्मण आंदोलन को राजनीतिक दिशा मिली।

3. गैर-ब्राह्मण आंदोलन :
---
(1) पश्चिमी भारत में गैर-ब्राह्मण चेतना
ब्राह्मण वर्चस्व के विरुद्ध आंदोलन
शिक्षा और नौकरियों में अवसर की मांग
सामाजिक समानता पर बल
इस आंदोलन ने आगे चलकर दलित राजनीतिक आंदोलनों की जमीन तैयार की।

4. डॉ. भीमराव अम्बेडकर और संगठित दलित आंदोलन :

पश्चिमी भारत के दलित आंदोलन का सबसे महत्वपूर्ण चरण B. R. Ambedkar के नेतृत्व में आया।

(1) बहिष्कृत हितकारिणी सभा (1924)
स्थापना: 1924, मुंबई
उद्देश्य: शिक्षा, राजनीतिक प्रतिनिधित्व और सामाजिक अधिकार
दलितों के लिए छात्रावास और पुस्तकालय की स्थापना

(2) महाड़ सत्याग्रह (1927)
स्थान: महाड़, महाराष्ट्र
उद्देश्य: सार्वजनिक जल स्रोत (चावदार तालाब) पर दलितों का अधिकार
अम्बेडकर ने मनुस्मृति दहन किया।

महत्व:
दलित आंदोलन का पहला संगठित जन-संघर्ष
सामाजिक समानता की प्रत्यक्ष मांग।

(3) कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन (1930)

स्थान: नासिक
उद्देश्य: मंदिर प्रवेश का अधिकार
लंबा संघर्ष (1930–1935)

(4) गोलमेज सम्मेलन और पृथक निर्वाचक मंडल
अम्बेडकर ने 1930–32 के गोलमेज सम्मेलनों में दलितों के लिए पृथक निर्वाचन की मांग की।
1932 में ब्रिटिश सरकार द्वारा कम्युनल अवॉर्ड

(5) पूना पैक्ट (1932)
समझौता: अम्बेडकर और Mahatma Gandhi,
पृथक निर्वाचन के स्थान पर आरक्षित सीटों का प्रावधान।

महत्व:

राजनीतिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित
दलित आंदोलन को राष्ट्रीय राजनीति से जोड़ा।

(5). स्वतंत्र श्रमिक पार्टी (1936)
स्थापना: अम्बेडकर द्वारा
उद्देश्य: मजदूरों और दलितों के अधिकार
1937 के चुनाव में सफलता।

(6). अनुसूचित जाति महासंघ (1942)
दलितों की राजनीतिक एकजुटता
स्वतंत्र भारत में अधिकारों की मांग।

(7). गुजरात में दलित आंदोलन :
---
(1) मंदिर प्रवेश आंदोलन
1920–30 के दशक में मंदिर प्रवेश की मांग
सामाजिक सुधारकों का सहयोग।

(2) सामाजिक सुधार संगठन
दलित शिक्षा और सामाजिक सुधार के लिए स्थानीय संगठन सक्रिय।

8. कर्नाटक (बॉम्बे प्रेसीडेंसी का हिस्सा) :

दलित शिक्षा आंदोलन
मिशनरी स्कूलों की भूमिका
सामाजिक समानता की मांग।

9. प्रमुख विशेषताएँ (Features) :

शिक्षा को आंदोलन का आधार बनाया गया।
धार्मिक-सामाजिक असमानता के विरुद्ध संघर्ष।
राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग।
आरक्षण की अवधारणा का प्रारम्भ।
स्वाभिमान और आत्मसम्मान पर बल।

10. सीमाएँ :

प्रारम्भ में शहरी क्षेत्रों तक सीमित,
आर्थिक मुद्दों की अपेक्षा सामाजिक मुद्दों पर अधिक ध्यान,
व्यापक राष्ट्रीय समर्थन का अभाव (प्रारंभिक चरण में)।

निष्कर्ष :

पश्चिमी भारत में प्रारम्भिक दलित आंदोलन ने भारतीय सामाजिक इतिहास में क्रांतिकारी परिवर्तन की नींव रखी। ज्योतिबा फुले से लेकर डॉ. बी.आर. अम्बेडकर तक यह आंदोलन सामाजिक सुधार से राजनीतिक अधिकार तक विकसित हुआ।
इसने न केवल दलितों को आत्मसम्मान और अधिकारों के लिए संगठित किया, बल्कि भारतीय संविधान में समानता, आरक्षण और मौलिक अधिकारों की अवधारणा को भी प्रभावित किया।